जीवराज जैन ग्रंथमालाका परिचय

सोलापूर निवासी श्रीमान् स्व. ब्र. जीवराज गौतमचंद दोशीं कई वर्षोंसे संसारसे उदासीन होकर धर्मकार्यमें वृत्ती लगाते रहे। सन १९४० में उनकी यह प्रबल इच्छा हो उठी की अपनी न्यायोपार्जित संपत्तीका उपयोग विशेषरूपसे धर्म और समाजकी उन्नत्तीके कार्यमें करे। तदनुसार उन्होने समस्त भारतका परिभ्रमण कर जैन विद्वानोंसे साक्षात् और लिखित संमतियां इस बातकी संग्रह की कि कौनसे कार्यमें संपत्तीका उपयोग किया जाय। स्फुट मतसंचय कर लेनेके पश्चात सन १९४१ के ग्रीष्म कालमें ब्रह्मचारीजीने श्री सिद्धक्षेत्र गजपंथके पवित्र भूमीपर विद्वानोंकी समाज एकत्रित की और ऊहापोहपुर्वक निर्णयके लिये उक्त विषय प्रस्तुत किया। विद्वत् संमेलनके फलस्वरुप ब्रह्मचारीजीने जैन संस्कृति तथा साहित्य के समस्त अंगोंके संरक्षण, उद्धार और प्रचारके हेतु ' जैन संस्कृति संरक्षक संघ , की स्थापना की और उसके लिए ३०००० तीस हजार रुपयोंके दानकी घोषणा कर दी। उनकी परिग्रह निवृत्ति बढती गई। सन १९४४ मे उन्होने लगभग २००००० दो लाख की अपनी संपूर्ण संपत्ति संघको ट्रस्टरूपसे अर्पण की। इसी संघ के अंतर्गत ' जीवराज जैन ग्रंथमाला ' का संचलन हो रहा है।

आजतक इस ग्रंथमाला द्वारा हिंदी विभागमे करीब ग्रंथ तथा मराठी विभागमे ग्रंथ तथा धवला विभागमें १से ७भाग छप चुके है। आगेके भाग क्रमश छप रहे है।

प्रस्तुत ग्रंथ श्री श्रीमंत शेठ रायसाहेब सिताबराय लक्ष्मीचंद जैन साहित्योद्धारक सिद्धांत ग्रंथमालाके द्वारा अधिकार प्राप्त जीवराज जैन ग्रंथमालाका सातवां पुष्प है।

निवेदक

रतनचंद सखाराम शहा

मंत्री

जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापूर.